आचार्य श्रीरजनीश
वैचारिक क्रांति

★

अवधिगत संन्यास
PERIODICAL RENUNCIATION

★

प्र. सं. मई' ७१ : २०००
३० पैसा

संकलन
श्री कस्तुरलाल गांधी

आचार्य श्री रजनीश

वैचारिक क्रांति

विषय : अवधिगत संन्यास

स्थान : लोनावाल साधना शिविर

मेरे मन में इधर बहुत दिन से एक बात निरन्तर ख्याल में आती है और वह यह है कि सारी दुनिया से आने वाले दिनों में संन्यासी के समाप्त हो जाने की संभावना है। संन्यासी आने वाले पचास वर्षो बाद पृथ्वी पर नहीं बच सकेगा। वह संस्था विलीन हो जायेगी। उसी संस्था की ईटें तो खिसका दी गयी हैं और अब उसका मकान भी गिर जायेगा। लेकिन संन्यास इतनी बहुमूल्य चीज है कि जिस दिन दुनिया से विलीन हो जायेगा उस दिन दुनिया का बहुत अहित हो जाये

मेरे देखे संन्यासी तो चला जाना चाहिए पर संन्यास बच जाना चाहिए। और इसके लिए *Periodical* संन्यास का *"Periodical renuciation"* का मेरे मन में ख्याल है। ऐसा कोई आदमी नहीं होना चाहिए जो वर्ष में एक महीने के लिए संन्यासी न हो। जीवन मे तो कोई भी ऐसा आदमी नहीं होना चाहिए जो दो चार बार संन्यासी न हो गया हो। स्थायी संन्यास खतरनाक सिद्ध हुआ है। कोई आदमी पूरे जीवन के लिए संन्यासी हो जाय, उसके दो खतरे हैं।

एक खतरा तो यह है कि वह आदमी जीवन से दूर हट जाता है, और परमात्मा के प्रेम की, और आनन्द की जो भी उपलब्धियां हैं वे जीवन के अनुभव में हैं। दूसरी बात यह होती है कि जो आदमी जीवन से हट जाता है उसकी जो शांति, उसका जो आनन्द है वह जीवन में बिखरने से बच जाता है, वह उसका साझीदारी नहीं हो पाता। तीसरी बात यह है कि गृहस्थ अलग

है और संन्यासी अलग है । और गलत काम करने पर हमें यह ख्याल रहता है कि हम तो गृहस्थ हैं, यह तो करना हमारी मजबूरी है । संन्यासी हो जायेंगे तो हम नहीं करेंगे । और धर्म और जीवन के बीच एक फासला पैदा हो जाता है ।

मेरी दृष्टि में संन्यास जीवन का अंग होना चाहिए । संन्यास जीवन को समझने की व्यवस्था होना चाहिए । जो आदमी थोड़े दिन के लिए संन्यासी नहीं हो जाता उसका जीवन अधूरा और उसकी शिक्षा अधूरी मानना चाहिए । अगर महीने दो महीने कोई व्यक्ति परिपूर्ण संन्यासी का जीवन जीता हो तो उसके जीवन में आनन्द के इतने द्वार खुल जायेंगे जिसकी हमें कल्पना भी नहीं हो सकती । इस दो महीने में वह पूरी तरह संन्यासी रहेगा । संन्यासी का जो दुनिया से संबंध होता है उतना भी उसका संबंध नहीं होगा । और यह जानकर आपको हैरानी होगी कि जो आदमी पूरे जीवन के लिए संन्यासी हो जाता है वह गृहस्थी के ऊपर निर्भर हो जाता है । इसलिए वह दिखता तो है संसार से दूर, लेकिन संसार के पास उसे रहना पड़ता है । लेकिन जो आदमी बारह महीनों में सिर्फ दो महीने के लिए संन्यासी होगा वह किसी के ऊपर निर्भर नहीं होगा । वह अपने ही दस महीने के गृहस्थ जीवन पर निर्भर होगा । यह संसार के ऊपर आश्रित नहीं होगा । इसलिए किसी से भयभीत भी नहीं होगा । वह किसी से संबंधित भी नहीं होगा ।

अगर एक आदमी पूरे जीवन के लिए संन्यासी होगा तो वह किसी का आश्रित होगा ही । वह बच भी नहीं सकता. और अन्तिम परिणाम यह होता है कि संन्यासी दिखाई तो पड़ते हैं लेकिन ये हमारे नेता नहीं अनुयायी के भी अनुयायी होते हैं । यह उनके पीछे चलते हैं ।

संन्यासी आज्ञा देते है गृहस्थ को कि तुम ऐसा करो और वैसा मत करो । लेकिन गृहस्थ उनका मालिक हो जाता है क्यों कि वह उनको रोटी देता है ।

संन्यासी गुलाम हो गया है । संन्यासी की गुलामी दूर हो सकतीहै एक ही रास्ते से कि वह कभी कभी संन्यासी हो । वर्ष में ग्यारह महीने वह गृहस्थ हो और एक महीने संन्यासी तो वह किसी के ऊपर निर्भर नहीं होगा । वह अपनी ग्यारह महीने की कमाई पर निर्भर होगा । फिर उसे किसी से लेना देना नहीं है । वह एक आदमी पूरी फ्रीडम, पूरी स्वतंत्रता का उपयोग कर सकता है बिना किसी के आश्रय के । वह यह एक महीना परिपूर्ण संन्यासी अनुभव करेगा जो कभी कोई संन्यासी नहीं कर पाता । तब वह पूरी मुक्ति से जी सकेगा । इस एक महीनें वह जिस विधि से जियेगा और जिस आनन्द को जिस शांति को अनुभव करेगा जिस स्वतंत्रता में प्रवेश करेगा, उसी को लेकर वापिस लौटेगा गृहस्थ जीवन में । और जिन्दगी के घनेपन में प्रयोग करेगा जो उसने एकांत में सीखा था । और क्या भीड़ में उसका उपयोग कर सकता है ? क्योंकि **एकांत में शिक्षा होती है और भीड़ में परीक्षा।**

जो भीड़ से बच जाता है वह परीक्षा से बच जाता है । उसकी शिक्षा अधूरी है । जो मैंने अकेले में जाना है अगर उसका मैं भीड़में उपयोग नहीं कर सकता तो जानना वह गलत है । वह बहुत मूल्य का नहीं हैं । वहां कसौटी है क्योंकि विरोध है, परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं है, वहाँ सब कुछ प्रतिकूल है । वहाँ भी मैं शांत रह सकता हूं या नहीं ? वहाँ भी मैंने जो एक महीने संन्यास साधा था, आनन्द पाया था, शेष वह रह जाता है, क्या मैं घर के भीतर, दुकान पर बैठकर भी संन्यास को पा सकता हूँ। या नहीं ? इसका ही बाकी ग्यारह महीने निरीक्षण करना है

Observe करना है । वर्ष भर बाद उसे फिर महीने भर के लिए लौट आना है ताकि आने वाले वर्ष भर की परीक्षा के लिए वह तैयार हो सके । नयी सीढ़ियाँ पार कर सके

एक आदमी बीस साल की उम्र के बाद सत्तर साल तक जिये और पचास वर्षों में पचास महीने के लिए वह संन्यासी हो सके तो इस जगत में ऐसा कोई सत्य नहीं है जिनसे वह अपरिचित रह जाये । ऐसी कोई अनुभूति नहीं है जिससे वह अनजाना रह जाये । और यह जो संन्यास *Renunciation* होगा—*Periodical*-एक अवधि भर के लिए लिया संन्यास होगा । यह उसे जीवन से नहीं तोड़ेगा ।

हमारा जो संन्यासी है वह जीवन विरोधी हो गया । पत्नी और बच्चे उससे भयभीत हैं ।मां-बाप -ससे भयभीत हैं । क्योंकि वह जीवन को उजाड़ कर चला जाता हैं । यह जो कभी कभी संन्यासा होना है इसमें जीवनसे भयभीत होने की कोई जरूरत नहीं है । बल्कि जब वह लौटेगा तब उसकी पत्नी पायेगी कि वह और भी प्यारा पति हो कर लौटा है । उसकी मां पायेगी कि वह ज्यादा श्रध्दा, ज्यादा प्रेम ज्यादा आदर, भरा हुआ बेटा होकर लौटा है । और इस एक महीने बाद ग्यारह महीने यह घर में जियेगा तो जो सुगंध उसने पायी हैं वह बिखरेगी उससे और प्रेमपूर्ण दुनियां बनेगी

अब तक के संन्यासी ने दुनिया को उजाड़ा है, बिगाड़ा है, बनाया नहीं हैं । जीवन को निर्मित करने में, सृजन करने में वह सहयोगी और मित्र नहीं रहा है । मेरे मन में एक अवधि के लिए लिया संन्यास अनिवार्य है । अब तक जैसे संन्यासी हुए हैं वे दुनि-ासे समाप्त हो जायें तो कोई डर नहीं हैं, संन्यास बचा रहना चाहिए । पुराना संन्यासी *Diffused* हो जायेगा बड़े पैमाने पर तो हर आदमी कोहक

हो जायेगा, संन्यासी होने का । अभी हर आदमी को संन्यासी होने का हक नहीं हो सका क्योंकि अगर हर आदमी संन्यासी हो जाये तो जीवन एक मरघट बन जायेगा, मृत्यु बन जायेगा ।

जो काम हर आदमी न कर सकता हो उस काम में निश्चित ही कोई भूल है । जो काम हर आदमी का अधिकार न बन सकता हो उसमें जरूर कोई भूल है ।

अगर सारे लोग संन्यासी हो जाये तो जीवम आज उजड़ जाये इसी क्षण । तो जो संन्यासी है उनको भी वापिस लौट आना पड़ेगा जीवन में । **आजीवन संन्यास भ्रांत है, गलत है ।** और संन्यास बच सके दुनिया में इसके लिए बड़ा प्रयोग करना जरूरी है ।

आपने कहा कि आप को मेरी बात समझ में तो आती, बुद्धि तक तो पहुंचती लेकिन उससे व्यक्तित्व परिवर्तित नहीं होता । ठीक कहते है आप क्योंकि व्यक्तित्व की बनावट वर्षों की बनावट है, पूरे जीवन की बनावट है और जो जानते है वे कहते हैं अनेक जन्मों की बनावट है । आप जो मेरी बात सुनते हैं वह जो एक छोटा सा कोना बुद्धि का है वहाँ सुनाई पड़ता है बुद्धि को ठीक भी मालूम पड़ता है । लेकिन व्यक्तित्व बुद्धि से बहुत बड़ी बात है । बुद्धि व्यक्तित्व का छोटा सा अंग मात्र है । पूरी *Personality-intellect* से बहुत बड़ी बात है । बुद्धि तो द्वार की भांति है । जैसे एक महल है उसमें एक दरवाजा है । लेकिन महल दरवाजा नहीं है, दरवाजा महल नहीं है । दरवाजे का कुल काम है महल में किसी को प्रवेश दे देना । इससे ज्यादा उसका कोई मूल्य नहीं है । बुद्धि तो केवल प्रवेश द्वार है व्यक्तित्व का ।

व्यक्तित्व बहुत बडी चीज है। और बहुत सी चीजों से निर्मित होता है जिनकी आप को कल्पना भी नहीं होती है कि इन इन चीजों से भी निर्मित होता होगा। आप की बुद्धि में एक बात पहुंच जाती है। लेकिन पूरा व्यक्तित्व उन चीजों से भी निर्मित है जिसके विरोध में आप की बुद्धि में बात पहुंच जाती है। और फिर उस व्यक्तित्व में कोई फर्क नहीं होता।

वह व्यक्तित्व वैसा ही बना रहता है। और तब आप बेचैनी में पड़ जाते है और तब मैं क्या करूँ, क्या न करूँ बड़ी दुविधा में पड़ जाता है। हाँ अगर आप संभव हो सके तो दो तीन महीने मेरे पास रहें तभी आप के समग्र व्यक्तित्व में कहाँ-कहाँ, क्या क्या परिवर्तन किया जाना चाहिए उसके लिए मैं सुझाव दे सकता हूँ। मेरे साथ रहकर उनपर आप प्रयोग कर सकते है। व्यक्तित्व कहाँ कहाँ बदल दिया जाये आप के ख्याल में आ जा सकता है। आप को पता नहीं कितनी अजीब सी चीजों से व्यक्तित्व जुडा रहता है जिसका हमें पता भी नहीं होता।

डा० सर हरीसींग गौर का नाम आपने सुना होगा। उन्होंने सागर विश्वविद्यालय का निर्माण किया था। यह हिन्दुस्तान के संभवतः अपने जमाने के बड़े से बड़े वकीलो में से थे। प्रिवीकौन्सिल में वकालत करते थे। उनसे मैं कुछ बात कर रहा था और पूरे व्यक्तित्व की बात उनसे मैंने कही तो उन्होंने कहा कि मुझे अपना एक अनुभव ख्याल आता है। मुझे हमेशा से एक आदत थीं जिसका मुझे कोई पता नहीं रह गया था। जब भीं मैं पैरवी करता था, (*Argue* करता था) अदालत में तब कोई गांठ आ जाती, कोई उलझन आ जाती, मेरी बुद्धि काम

नहीं करती तो मैं अपने कोट के बटन घुमाने लगता था। इसका मुझे पता ही न था। यह *Unconscious habit* का हिस्सा हो गई थी। जैसे ही मैं कोट के बटन घुमाता था मुझे रास्ता मिल जाता था। जैसे कोई आदमी शरीर के किसी अंग को खुजलाता है, कोई आदमी और कुछ करता है। वैसे ही वे बटन घुमाते थे। एक बार किसी स्टेट के एक बड़े मामले में वे वकील थे। उनका विरोधी वकील यह बात निरन्तर देखता रहा था कि जब भी कुछ आरग्युमेंट (*Argument*) करने में उन्हें कठिनाई होती, वे बटन घुमाते थे। उनने उसके ड्राइवर को मिला कर उनके कोट का वह बटन निकलवा दिया था।

वे अदालत में पहुंचे कोट पहिन कर जब पैरवी (*Argument* कर रहे थे तब एक उलझन आयी, उनका हाथ बटन पर गया पर बटन वहाँ नहीं था और तब एकदम उनकी सारी बुद्धि ने काम करना बन्द कर दिया था। और यह उनका पहला मौका था जब वह मुकदमा हार गये थे। वह मुझसे बोले कि बटन के पीछे मैं हार गया था. लेकिन उस वक्त मुझें कुछ भी समझ नहीं पड़ा कि बटन ही मेरे लिए सब कुछ हो गयी थी। एक (*Association*) एक संबंध, एक गहरी *Conditioning* हो गयी थी दिमाग की, कि जब बटन घूमती तो मस्तिष्क काम करता, बटन नहीं घूमती तो मस्तिष्क काम नहीं करता।

अब बटन जैसी छोटी सी चीज से मस्तिष्क के चलने का इतना अनिवार्य सम्बन्ध हो सकता है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। बटन जैसी छोटी चीजों से भी सारा व्यक्तित्व संचालित होता है इसका हमें पता भी नहीं है। इसलिए पूरे

व्यक्तित्व की बदलाहट के लिए बहुत सी बातें जानना जरूरी हैं जिनकी हमें कल्पना भी नहीं हो सकती कि ये बातें भी इतनी जरूरी हैं । अब एक आदमी शांत होना चाहता हैं और चुस्त कपडे पहने हुए है । उसे कल्पना भी नहीं हो सकती कि चुस्त कपड़े और मन के शांत होने में विरोध हैं । यह दिखाई भी नहीं पड़ता, अन्यथा हम मिलीटरी में चुस्त कपड़े पहनना बन्द करवा देते । मिलीटरी में चुस्त कपड़ा पहिनना अत्यन्त जरूरी है। चुस्त कपड़ा लड़ने की वृत्ति मे सहयोगी है ढीला कपड़ा लड़ने की वृत्ति में सहयोगी नहीं है ।

जो कौमे ढीले कपड़े पहनती हैं वे लड़ाकू नहीं रह जाती । अब कपड़े जैसी फिजूल की चीजों से भी किसी के व्यक्तित्व के भीतर लड़ने, अशांत होने, शांत होने का संबंध हो सकता है। और यह एकदम ख्याल भी नहीं आता । आप को पता नहीं यदि आप चुस्त कपड़े पहिने है और सीढियाँ चढ़ रहे हैं तो दो दो सीढ़ियां एक साथ चढ़ जायेगे और ढीले कपड़े पहिने हैं तो एक ही एक सीढ़ी चढ़ पायेंगे, दो सीढ़ियाँ एक साथ चढ़ ही न सकेंगे । नौकरों को चुस्त कपड़े जानकर पहिनाये जाते है ताकि वे तेजी से काम कर सकें । मालिक ढीले कपड़ें पहनते रहे हैं क्योंकि उनको काम करने का कोई सवाल ही नहीं है । सारी दुनिया में संन्यासियों ने ढीले कपड़े चुन लिये थे, इसका भी कोई कारण है कि उन्हें कोई काम नहीं करना था । जिन्हें कोई काम करना है उन्हें चुस्त कपड़े पहिनने चाहिये । चुस्त कपड़े मन में चुस्ती ले आते हैं, तीव्रता ले आते हैं, गति ले आते हैं। ढीले कपड़े शिथिलता लाते है, एक *Relaxed mind* पैदा करते है। भीतर सब *Relaxed* हो जाता है।

यह मैं उदाहरण के लिए कह रहा हूं। व्यक्तित्व के बहुत से हिस्से है जिससे वह बनता है । आप के जूते से लेकर आप की टोपी तक, आप के बोलने के शब्दों से लेकर सपनों तक, सब आप के व्यक्तित्व को निर्मित करते हैं । आप मेरी बातें सुनकर सोचें कि बदलाहट हो जायेगी तो आप पागल हैं। ऐसे कही बदलाहट होती है ? यह तो बदलाहट के लिए इशारा हुआ ।

अगर यह इशारा समझ में आता है तो इसका मतलब यह हुआ कि आप अपने पूरे व्यक्तित्व में खोजें कि विरोध में कहाँ, कहाँ, क्या क्या पड़ा है । और अगर दिखाई पड़ जाये कि विरोध में है तो आप बदल लेंगे । बदलाहट के लिए कुछ बहुत करना नही पड़ना । एक दफे दिखाई पड़ना चाहिए, ख्याल में आना चाहिए कि कहाँ बात अटकी है। और इतनी क्षुद्र चीजों में बात अटकी होती है जिसका हमें ख्याल भी नहीं होता। आप सोचते हो कि बहुत बड़ी बड़ी चीजो से बात अटकी है तो आप गलती में हैं। जिन्दगी में बड़ी बड़ी बातें हैं ही नहीं । जिन्दगी में बहुत छोटी बाते है और हम बड़ी बातो पर विचार करते रहते हैं और समय गवाँ देते हैं । जिन्दगी में बहुत छोटी छोटी बातें हैं जिन पर न कोई विचार करता, न फिकर करता न कोई हिसाब लगाता । और उन छोटी छोटी बातों से ही सारा व्यक्तित्व निर्मित होता है।

इन छोटी-छोटी बातों पर प्रयोग करना संभव हो सकता है यदि आप मेरे निकट थोड़े दिन रहें ताकि मैं आप की छोटी-छोटी बातों को देख सकूँ आप को कुछ सुझाव दे सकूँ, आप को कुछ फर्क करने के लिए कह सकूँ । कह सकूँ आप से इसे करके देखें क्या फर्क होता है ? कई बार बहुत छोटा चीजें बहुत बड़े

परिवर्तन ले आती है । जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते । जिनका हम संबंध भी नहीं जोड़ पाते कि इतनी छोटी बात का इतना बड़ा सबन्ध हो सकता है । लेकिन व्यक्तित्व बड़ी जटिल, बड़ी *Complex* बात है । बुद्धि अधूरी है, बुद्धि द्वार है, बुद्धि से शुरुआत होती है अंत नहीं होता ।

मेरी बातें सुनकर प्रारम्भ हो सकती है, अन्त नहीं। वे आप के लिए आमन्त्रण हो सकती हैं, समाधान नहीं । समाधान के लिए उचित है कुछ समय मेरे पास रहें । और फिर आप कोई केन्द्र बनाते हैं तो कई महत्वपूर्ण काम और भी किये जा सकते हैं । जैसे देश भर में जितने मेरे मित्र हैं सभी कहते हैं कि उनके बच्चों के लिए मैं कुछ करूँ। उनके बच्चों के लिए कुछ विचार करना जरूरी है । अगर कभी भी कोई केन्द्र बनता है तो महीने दो महीने के लिए अलग केम्प रखे जा सकते हैं। दो महीने की छुट्टियों में मेरे सारे मित्रों के बच्चे आकर मेरे पास रहें। उनके साथ मैं थोड़ी मेहनत करूँ क्योंकि असली मेहनत उनके साथ हैं । आप के साथ उतनी असली मेहनत नहीं हो सकती। और अगर आप को मेरी बात समझ में आती हैं तो आप अपनी कम फिकर करिये, अपने बच्चों की ज्यादा फिकर करिये । उनके साथ बहुत आसानी से जो हो सकता है वह आप के साथ बहुत कठिनाई से हो सकेगा। क्योंकि आप का जाल करीब करीब खड़ा हो गया और उस जाल के साथ आप का मोह भी बंध गया है। बच्चों के साथ कोई जाल नहीं है । अगर आप में हिम्मत हो तो बच्चों को क्रांति की दिशा में संलग्न करे जहाँ सभी इकट्ठे होकर मेरे पास प्रयोग कर सकें । आज नहीं कल यह भी हो सकता है कि वहाँ एक विद्यापीठ हो,

एक छात्रावास हो जहाँ वे पढ़े और रहें । उनके पूरे जीवन पर प्रयोग कर किया जा सके । यह भी हो सकता है बड़े बड़े होस्टेल हों, जहाँ बच्चे रहें और पढ़ें चाहें कहीं भी । पढ़ने से उस संस्था का कोई संबंध न हो । लेकिन उनके जीवन चर्या पर, वे कैसे रहें, कैसे उठें, क्या करें उसके लिए प्रयोग किये जा सकें ।

तीसरी बात मुझे पूरे मुल्क में जगह जगह सैकड़ों लोगों ने यह बात कही है कि अगर प्रत्येक रात्रि ध्यान का पूरा प्रयोग रेडियो से (*Relay*) प्रसारित किया जाये तो लड़के लोग अपना रेडियो खोलकर अपने घर पर प्रयोग कर सकते है । आज नहीं कल आप के पास कोई बड़ा केन्द्र हो तो पूरा ट्रांसमिशन सेन्टर आप के पास हो सकता है ।

मेरे पास स्थायी रूप से रहने और प्रयोग करने के लिए ढेरों पत्र आते हैं पर मैं कहाँ व्यवस्था करूँ ? अभी तीन दिन पहले एक वृद्ध जन का पत्र आया था कि मेरी सत्तर वर्ष की उम्र है और मेरे जीवन के अब जो दो चार बरस बचे हैं उन्हें मैं खोना नहीं चाहता और जब से आप की बात सुनी है तब से मैं मुश्किल में पड़ गया हूँ । जो मैं करता था वह फिजूल हो गया है और अब मृत्यु इतनी करीब है कि मैं चाहता हूँ कि आप के निकट रहूं और जो करने जैसा है वह मैं करूं । मैं अपना खर्च उठा लूंगा, सब कर लूंगा । लेकिन मेरे पास तो कोई व्यवस्था नहीं है। व्यवस्था बन जाये तो हम एक उम्र की सीमा बांध सकते हैं जैसे पंचपन साठ के बाद वहाँ स्थायी रूप से संन्यास लेकर रह सकें और उसके पहलें अल्पकालिक *Periodical*

संन्यास के लिए वहाँ ग्रा सकें। बहुत से लोग उत्सुक हैं। मुझे वह ठीक लगता है।

मेरे बहुत से मित्र सोचने लगे हैं कि पचास-पचपन तक काम किया, सब व्यवस्था कर ली, अब हम चाहते हैं आप के पास रहें। मेरे एक मित्र हैं उन्होंने मेरी यह बात सुनी, उनकी उम्र पचास वर्ष थी उन्होंने कहा बस इस वर्ष मेरी वर्षगांठ आती है ग्रौर मैं ग्रपना सारा काम समाप्त कर दूंगा। बहुत हो गया, कमा लिया बहुत, रखने लायक. ग्रब मेरे लिए कोई जरूरत भी नहीं, अब मैं किस लिए कमाने जाऊँ? ठीक वर्षगांठ पर सब बन्द करवा दिया। दुकाने बंद करवा दीं, हिसाब बंद करवा दिया अपनी पत्नी को कहा कि अब हमारे पास इतना है कि हम दोनों अगर सौ बरस भी जियें तो भी बच जायेगा। ग्रब हम करेगे क्या? वह मुझे बार बार लिखते हैं कि मैंने सब बन्द कर दिया। ग्रब मैं चाहता हूं आप के पास ग्रा जाऊँ। अब मैं क्या करूँ मेरे पास कोई व्यवस्था नहीं है। मैं फिर भी यहाँ वहाँ घूमता फिरता भी हूं। मैं किसको किसके लिए कहूं? उचित यही है कुछ इस तरह की व्यवस्था बने जहाँ कुछ लोग स्थायी रूप से ग्राकर रहना चाहें तो रह सकें और बार बार ग्राकर रहना चाहे तो भी रह सकें।

थाईलैण्ड, बर्मा और जापान तीनो देशों में *Pcriodical Renunciation* अल्पकालिक संन्यास की व्यवस्था है। प्रधान मंत्री से लेकर नीचे तक का आदमी यह सौभाग्य पा जाता है। जीवन में कभी न कभी संन्यासी हो जाता है। हम भी भागते हैं, कभी कोई महीने भर के लिए मसूरी जाता है कोई

लोनावाला आता है लेकिन क्या फर्क पड़ता है? उस भागने मे कोई भी फर्क नहीं पड़ता सिर्फ स्थान बदल जाता है। थोड़ी आबोहवा बदल जाती है। लेकिन मस्तिष्क नहीं बदलता। इसलिए हमें इसके संबंध में कुछ व्यवस्था करना चाहिए, और बच्चों के संबंध में कुछ कर सकूँ इसकी फिकर करनी चाहिए। अभी जो शिविर होते है वह तीन दिन के लिए ही होते है और वहाँ बहुत विस्तार से पूरे जीवन के सभी पहलुओं को छू पाऊँ यह संभव नहीं हो पाता।

एक स्थायी केन्द्र हो तो बिशिष्ट विषयों पर अलग अलग शिविरों का आयोजना कर सकते हैं। मेरी दृष्टि सभी विषयों के प्रति है। मुझे ऐसा नहीं मालूम पड़ता कि भगवान के संबंध में बात ही करना जरूरी है। मुझे मालूम पड़ता है सैक्स (*Sex*) के संबंध में भी बात करना उतना ही जरूरी है। मुझे ऐसा नहीं मालूम पड़ता कि ध्यान के संबध में बात करना जरूरी है। ऐसा भी मालूम पड़ता है कि प्रेम के संबंध में भी बात करना उतना ही जरूरी है। मुझे यह नहीं मालूम पड़ता कि योग के संबंध बात करना जरूरी है। भोग के संबंध में भी उतना ही बात करना जरूरी है। कितने ही मित्रों ने मुझे पत्र लिखे हैं कि एक दम्पत्तियों का शिविर हो जिसमें पति पत्नि साथ सम्मिलित हों, या एक पारिवारिक शिविर हो, जिसमें कोई भी व्यक्ति पूरा परिवार लेकर सम्मिलित हो जहाँ मैं पूरे परिवार के संबंध में, पूरे परिबार के सोचने विचारने के ढंग के संबंध में, पूरे परिबार के अन्तर-सम्बन्धों के सम्बन्ध में, घर के सम्बन्ध में, पूरे विचार रख सकूँ, कि वे घर में कैसे जियें, परिवार में क्या हो, क्या न हो। अभी तो परिवार में सब गलत हो रहा है। वह इतना कुरूप हो गया हैं जिसका कोई हिसाब नहीं। मकान ग्रच्छे बनते जा रहे

हैं और परिवार कुरूप से कुरूप (*Ugly* से *Ugly*) बनते जा रहे हैं। एकदम सड़ गया है परिवार। उसमें कोई प्रेम नहीं, कोई आदर नहीं, कोई सुखद अन्तर सम्बन्ध नहीं।

इधर गहरी ऊब पर सारा जीवन चल रहा है और उधर हम शान्ति की तलाश करेंगे। अगर परिवार हमारा नहीं बदलता तो शान्ति नहीं मिल सकती। इसलिए पूरे परिवार के अन्तर जीवन में क्रान्ति हो सकती है इसके लिए अलग शिविर हो। विवाह, प्रेम, सैक्स इनके सम्बन्ध में अलग शिविर हो। आज युवा पीढ़ी के लिए यही सबसे बड़ा प्रश्न खड़ा हो गया है और इसका कोई हल नहीं निकलेगा तो पूरा समाज डूब जायेगा।

भोग की निन्दा करने का कोई अर्थ नहीं है। भोग भी जीवन का अनिवार्य हिस्सा हैं। और जो सम्यक रूप से भोगने में समर्थ हो जाता है वह योग को उपलब्ध हो जाता है। योग और भोग में विरोध नहीं है। जो विरोध आज तक रखा गया है उससे नुकसान ही हुआ है, फायदा नहीं। एक सामान्य भोग का जीवन कैसे योग में प्रविष्ट हो सकता है, इन दोनों के बीच क्या सेतु हो सकता है, इन दोनो को जोड़ने वाला क्या मार्ग हो सकता है उस पर सोचना, काम करना जरूरी हैं।

जीवन के सारे प्रश्नों पर, समाज की व्यवस्था पर, अर्थ की व्यवस्था पर, सब तरफ विचार करना जरूरी है। आप को ख्याल नहीं जिस पर आप विचार नहीं कर रहे वे सब आज नहीं कल मसले की तरह खड़े हो जायेंगे। आज नहीं कल मुल्क के सामने कम्यूनिज्म (*Communism*) का सवाल हो। उससे आप बच

नहीं सकेंगे, उससे आप भाग नहीं सकेंगे और अपने कुछ सोचा नहीं तो कम्यूनिज्म एक हत्यारे की तरह पूरे मुल्क पर छा जायेगा, एक खूनी क्रान्ति की तरह छा जायेगा। और हमने सोचा, विचारा, मुल्क की बुद्धि को तैयार किया तो कम्यूनिज्म (*Communism*) एक अत्यन्त शान्ति पूर्ण ढंग से मुल्क में आ सकता है। लेकिन धार्मिक आदमी इन पर विचार ही नहीं करता। मेरी दृष्टि में पूरा जीवन हीं विचारणीय है। आज नहीं कल अर्थ के सवाल खड़े होंगे। सारे मुल्क की सब नीति सड़ गई है। उसमें हम सब पिसे जा रहे हैं। सब गाली दे रहे हैं और कोई हल, कोई रास्ता नहीं मिल रहा है। अन्धों की तरह खड़े हैं और बरदास्त कर रहे हैं। जो हो रहा है वह देख रहे है। वह ऐसा ही हैं जैसे मकान करीब करीब जल गया हो और हम बाहर खड़े खड़े निन्दा कर रहे हो कि किसने आग लगा दी ? और यह क्या हो गया ? यह आग कैसे बुझेगी। मकान जलता जा रहा है और हम सब खड़े विचार कर रहे हैं कि मकान जल रहा है। सौ पचास साल बाद हमारे बच्चे हमें लानत देंगे कि ये कैसे लोग थे कि पूरा मुल्क जलता रहा, बेकूफ़ियाँ बढ़ती रही और सब बैठकर देखते रहे, चर्चा करते रहे और कुछ भी नहीं किया।

राजनीति पर भी विचार करना जरूरी है कि मुल्क की राजनीति कैसी हो ? मुल्क का धर्म कैसा हो ? मुल्क की समाज व्यवस्था कैसी हो ? मुल्क की आर्थिक व्यवस्था कैसी हो ? इन सब पर ही मुल्क में जगह जगह मुझसे पूछते है। अभी माथेरान में ही मुझसे पूछा गया जिसका मैंने उत्तर नहीं दिया क्योंकि उत्तर देने के लिए पूरा कैम्प ही चाहिए। एक मित्र ने पूछा था कि क्या मैं अपनी सारी शक्ति थोड़े से लोग को शान्त होने की दिशा में

ही लगा दूँगा ? क्या वृहत्तर समाज के लिए मेरी शक्तियाँ काम में नहीं लाऊँगा ? जिससे इस मुल्क का पूरा जीवन प्रभावित हो सके इस दिशा में आप कुछ न करेंगे ? उनका पूछना ठीक है। मेरे मन में भी है कि कुछ किया जाना चाहिए। कुछ नहीं करो का मतलब है कि फिर जो हो रहा है उससे मैं सहमत हूं, नहीं करने का मतलब नहीं करना नहीं होता। नहीं करने वाला भी किसी न किसी रूप में सहमत है। अगर एक आदमी किसी की हत्या कर रहा है और मैं कहता हूं कि मुझे कुछ भी नहीं करना तो भी मैं हत्यारे के साथ हूँ। क्योंकि मैं हत्या देख रहा हूं खडे होकर। मैं रोक सकता था और नहीं रोक रहा हूं तो मैं उसमें सहयोगी हो रहा हूँ। यह सोचिये कि कोई आदमी राजनीति में भाग नहीं ले रहा. आप के साधु राजनीति में उत्सुक नहीं है तो यह मत सोचिए कि वे राजनीति मे भागीदार नहीं है। वे राजनीति में भागीदार हैं। क्योंकि जो चल रहा है फिर उसमें उनकी सहमति हैं. क्योंकि फिर जो हो रहा है उसमें उनका कोई विरोध नहीं है।

जिन्दगी में जो भी जी रहा है वह जिन्दगी की हर चीज में भागीदार है। वह कहीं भाग नहीं सकता। भागता है तो भी भागीदार है क्योंकि वह यह कहता है कि मैं कुछ भी करना नहीं चाहता इस संबंध में। इसका मतलब है जो कुछ हो रहा है उसमें सहमति दे रहा है।

जीवन के सभी पहलुओं को छुने की अत्यन्त जरूरत है क्योंकि सारा जीवन अन्तर सम्बन्धित (*Inter-related*) है। सब एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। मुल्क की राजनीति अगर गलत हैं तो मुल्क की शिक्षा ठीक नहीं हो सकती। मुल्क की शिक्षा ठीक

नहीं होती तो मुल्क का धर्म ठीक नहीं हो सकता। मुल्क का धर्म ठीक नहीं होता तो शिक्षा ठीक नहीं होगी। शिक्षा ठीक नहीं होगी तो राजनीति ठीक नही हो सकती। सब जुड़ा हुआ है और इस सारे जुड़े हुए के लिए एक सम्यक दृष्टि, एक जीवन व्यवहार एक जीवन चर्या विकसित करने के लिए जरूरी होगा कि एकांत में अधिक दिनों तक अधिक मसलों पर *Conference*) बुलायी जा सकें। सेमिनार *Seminar* बुलाई जा सकें, शिविर बुलाये जा सके जहाँ हम शांति से रह सकें। अभी शिविरों में हम किसी होटल में ठहर जाते हैं। होटल - होटल हैं, होटल का कोई (*Psychological Atmosphere*) नहीं होता, मानसिक वातावरण नहीं होता। यहाँ आकर ठहरने से खाने, पीने, रहने का काम हो जाता है।

लेकिन अगर हम कोई स्थल बनाते हैं तो हमारी दृष्टी है कि उसमें पूरा मनोवैज्ञानिक वातावरण निर्मित करेंगे। वहाँ के वृक्षों को भी आप से कुछ कहना चाहिए। वहाँ के मकान को भी आप से कुछ कहना चाहिए। वहाँ के रास्ते भी आप को कुछ सुझाव दें. वहाँ की हवा भी आप से कुछ कहे, वहाँ के जो लोग रहें उनकी मौजूदगी भी आप से कुछ कहे। वहाँ एक पूरा *Psychological Atmosphere* मनोवैज्ञानिक वातावरण होना चाहिए। उस स्थान में प्रविष्ट होते ही आदमी को लगे कि स्थान ही नहीं बदला, मेरे मन की धारणायें और तरंगे भी बदल गयी है। यह सब वहाँ किया जा सकता है। छोटी छोटी चीजों से सारा फर्क पड़ता है। हिटलर हुकूमत में आया तो उसने इन्कार करवा दिया कि किसी भी बच्चे को गुड़ियों से न खेलने दिया जाये. गुड्डा गुड्डी के शादी विवाह न रचने दिये जायें। बच्चों के सारे

खिलौने बदल दिये जायें। तोप, बन्दूक, तलवार ये खिलौने होंगे। छोटा बच्चा पहले दिन झूले पर आयेगा तो उसके उपर घुन घुना नहीं लटका होगा उसके स्थान पर तोप लटकी होगी। वह पहले दिन भी देखे तो तोप देखे। उसके *Mind* पर पहला *Impression* प्रभाव तोप का हो। हिटलर ने कहा गुड्डा-गुड्डी नहीं चलेंगे। ये बच्चों को कमजोर बनाते हैं ये *Impotent* नपुंसक बनाते हैं। ये बच्चों को बलवान नहीं करते, युद्ध के लिए तैयार नहीं करते। युद्ध के लिए बच्चों को तैयार करना है तो पहले दिन ही उन्हें तोप मिल जानी चाहिए।

अभी आप को ख्याल नहीं है कि बच्चों के सारे खिलौने लाल रंग से रंगे होते है जो बिल्कुल गलत है। लाल रंग से रंगे हुए खिलोने जो बच्चे खेलेंगे वे अशांत होंगे। लाल रंग मन में अशांति पैदा करने का बड़ा मूलभूत कारण हैं। आप हरे दरख्तों वृक्षों को देखकर खुश हो जाते हैं, क्यों ? हरे वृक्षों में क्या हैं सिवाय हरे रंग के? जंगल में जाकर आप खुश होते है आपको शांति मालूम पड़ती है, कारण सिर्फ हरा रंग है और कुछ भी नहीं। सिर्फ हरे रंग का विस्तार आंख के स्नायुओं को शिथिल कर देता है, शांत कर देता है। अगर लाल रंग को बहुत देर तक देखते रहें तो आप क्रोध से भर जायेंगे। यहाँ इस कमरे में यदि सब लोग लाल कपड़े पहिन कर बैठे तो थोड़ी देर में आप इस कमरे से घबरा जायेंगे, आप को *Suffocation* घुटन मालूम होगी। आप को लगेगा यहाँ बड़ी गड़बड़ है यहाँ से हट जाना चाहिए। यह *Soothing* सुखद नहीं है।

यदि बच्चों को भविष्य मे शांति की दुनिया में ले जाना है तो उनके खिलौने लाल रंग से नहीं, हरे रंग से रंगे हुए होना

चाहिए। नहीं तो वे अशांति में जायेंगे। मेरा कहना है जीवन इतनी छोटी छोटी चीजों से संयुक्त है, जुड़ा हुआ है और उन सब पर विचार, चिन्तन करने के लिए जो केन्द्र बने वह वैज्ञानिक दृष्टि से बनें। वहाँ के रंग वहां के मकान, वहाँ के पौधें, वहाँ के फूल, वहाँ के सड़कें वहाँ की हवा सब वैज्ञानिक ढंग पर नियोजित हो। एक आदमी वहां प्रविष्ट हो तो सब तरह से उनके भीतर परिवर्तन हो सके इनकी सारी व्यवस्था हमें जुटा देना है। वह केन्द्र कोई साधारण केन्द्र होने वाला नहीं है, वह तो एक पूरी वैज्ञानिक प्रयोगशाला होगी। वह पूरी वैज्ञानिक प्रयोगशाला हो तभी हम आदमी को पूरा बदल सकेंगे थोड़े दिनों में। और बदला हुआ आदमी जो सीखकर जायेगा, लेकर जायेगा उससे अपने घर में परिवर्तन करने की कोशिश करेगा।

आप सोचे उस दिशा में, कुछ करें उस दिशा में मैं भी श्रम करने को राजी हूँ। वहाँ सब सरलता से हो सकता हैं यदि सारी व्यवस्था जुटा दी जाये। और फिर जैसा कहते हैं कि मेरा व्यक्तित्व नहीं बदला तो आप का व्यक्तित्व भी इतना बदल दिया जा सकता है कि आप स्वयं कहने लगेगें कि और मत बदलिये, अब मुझें घर जाने दीजिए। इसमें जरा भी कठिनाई नहीं है।

आदमी का व्यक्तित्व बदलना कोई कठिन बात नहीं है, जरा भी कठिन नहीं है। क्योंकि व्यक्तित्व बदलने की तो साफ साइन्स है। बनाने का साइन्स है, हमने बनाया है एक खास ढंग से। उसमें जहाँ जहाँ ईंटें हमने रखी हैं उन्हें खिसका देना है और व्यक्तित्व उलटा हो जायेगा, बिल्कुल दूसरा हो जायेगा। तो इस दिशा में सोचे। और भी जो सुझाव आये हैं मित्रों के वे भी महत्वपूर्ण है। जैसे साहित्य अधिकतम लोगों तक पहुंच सके इसके

लिए कुछ सोचें। और सोचेंगे तो बहुत से मार्ग निकल आयेंगे, बहुत से मित्र मिल जायेंगे जो अपना श्रम अपनी शक्ति दे सकेंगे। मुझे लोग जगह जगह पूछते है कि हम क्या करें? हम कुछ करना चाहते हैं? हमारे पास कोई काम नहीं है, आप हमें काम बतायें। आप के पास काम हो तो लोगों की कोई कमी नहीं पड़ेगी बहुत से अच्छे अच्छे लोग आते जायंगे। और रोज अच्छे अच्छे आते जायेंगे।

कोई आदमी कुआ खोदता है तो पहले कंकड़ पत्थर हाथ लगते हैं और फिर थोड़ी देर बाद अच्छी जमीन हाथ आती है और फिर पानी के स्रोत आते हैं। हमें अपने को पत्थर कंकड़ ही मानना चाहिए क्योंकि अभी कुआ खोदना शुरू किया है। हमसे बहुत अच्छे लोग आ जायेंगे, हमसे ज्यादा काम करने वाले, हमसे ज्यादा बुद्धिमान, हमसे ज्यादा लगनशील और हमारी तैयारी होनी चाहिए कि जब भी हमसे ज्यादा लगनशील लोग आये तो हम अपनी जगह छोड़ दे और उनको कहे कि तुम आ जाओ, तुम हमसे बेहतर काम संभाल सकोंगे। यह तो प्रेम पर आधारित मित्रों के समूह का लक्षण होता है कि वे हमेशा जगह छोड़ने को राजी होते है। तैयार होते है कि कोई आदमी बेहतर आ जाये तो जगह छोड़ दूँ। मैं तो तभी तक काम करूँगा जब तक मुझसे बेहतर नहीं आ जाता। बेहतर आये तो मैं तत्काल अलग हो जाऊँगा इतना बड़ा मुल्क है इतनी ऊर्जा है लोगों के पास इतने बढ़ियां लोग हैं कि हम जिस दिन पुकारना शुरू करेंगे उस दिन बहुत लोग आ जायेंगे। अभी हमने पुकारा नहीं है, अभी कोई आवाज नहीं की है हमने, अभी इस दिशा में मैंने मुल्क को कुछ नहीं कहा। आप तैयार हो तो कहना शुरू करूँगा। और जैसे ही अपील करूंगा तो देश से अनेक लोग आपको मिलेंगे। इससे आप काम खोजें, बाकी काम मेरा है।

❀ ❀ ❀

प्रकाशक : **श्रीकस्तुरलाल गांधी युथफोर्स**, बम्बई *c/o.* जीवनजागृतिकेन्द्र
एम्पायर बिल्डिग, दादाभाई नौरोजी रोड, **बम्बई-१**
मुद्रक : अ० ना० धर द्विवेदी, राष्ट्रभाषा प्रेस, **बम्बई-२६**